

Title of Mss. *Purnush Garam*  
*VIDHI*

No. of Folios :

Materials : *PP*

Conservation : Preventive/Curative

Performed by KKHL, MCC : GU

National Mission for manuscripts,

New Delhi,

Date:

*29.10.06*

*37*

पुस्तक गठन विधि / कायदा /  
१-१ भाग / अक्षरों का प्रयोग /  
२०x२० CM / ठेक लिखावट का है

Chidananda Goswami  
KKHL MRC Catalogue

कायदा का प्रयोग



पूज्य मन्त्र तिथि ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ नवा कृष्ण ज्ञानाथ दुःखनिवार दुःख नाशकः ॥  
 मन्त्रो नमो त्र्यम्बक्यते नमः ॥ ॥ अस्तित्वात् दुःखमानेपि दुःखनाशकं  
 कृते । आषुद्धत त्र्यम्बकं यथावश्यकं नित्यम् ॥ ॥ ॥ एतदोद्भवदिने बालकवत् कुर्यात्,  
 पञ्च दिवसे श्रान्तादि अमास्युत्तरे यथाशक्ति विद्विभोज्य नानाद्रव्यवशादि अस्ति शुक्रगृहे  
 अमासते शुक्लांशे दशवत् कुर्यात् ॥ ॥ ॥ ॥ अस्तु वाक् उवाच श्रुत्वा श्रुत्वा बालक उवाच ॥  
 त्र्यम्बके नमो माने दशवत् कुर्यात् उवाच ॥ ॥ ॥ शुक्रवते यथा ॥ ॥ शुभशोभः यमः कर्म  
 महाप्रतापि पञ्चमे । एते शुभशुभशुभे कर्मणो नव आदिनेः ॥ ॥ शुभ, चन्द्र, यम,







यः सम्यक्त्वं सम्यक्त्वं ॥१॥५॥ उरुवेवुअनेचेव दुर्भिक्षे मसु विप्रहे । बाहुद्वारे  
मसाने च यः त्रिषति अवाक्वः ॥१॥६॥ शीघ्राग्नेन गुरुनिद्रा सुथासिता सुतच्छ ।  
दोषान्मत्तमिच्छुः सुथा सुत कथयन् ॥१॥७॥ सुखात्तादुते मिथ्या न त्स्यात्तावोश्च  
वर्जयेत् । सुखाथे आसित् मिथ्या मादोषः मिथ्य सुतये ॥१॥८॥ उच्छ्राने च यानादि  
पादुका च कथयन् । अवस्ये पवभावके के वादु जव्य मिथ्यो ॥१॥९॥ अहिंसा पवमेर्विष्णुः  
अवकार्योऽपि दानि । हिंसा तु मये याति वस्मे वक्रति वाम्बिकः ॥१॥१०॥ नत सुत्रो अमो  
सुत्रं नत वाम्य अमो अयं । नत वाजा अमो आजा कयते सुक अमिषी ॥१॥११॥

१४॥ श्रानादि कर्तव्यो नित्यं गुरुदक्षे च लामना । नव्यद्रव्यानि अहं लवे दीयते गुरुभिरिषो ॥ १४ ॥  
 एक आदि उवे येषां अदा सुवे अवे अला । एका मे सि यते तेन अन्यथा पात कि उवे ॥  
 १५॥ सुखा च अत्यमानिया अथि कस्या वि के दाने । बहू षने च तपु ले यानि आनि च सुश्रवे ॥  
 १६॥ सुखा र्थे चित्तये कर्मा अदा सुवे ही त जव्या । सुखा न्याय कृते निश्चि द्वा वि दी पाष सु मे च ॥  
 १७॥ गुरु कर्मे अदा वा र्था यथा गृहे च । सुश्रवणे च नि यत पाप कि लि पि नाशनं ॥ १७ ॥  
 १८॥ सुश्रवणं च अथा अवे अं सुखा पाणि च बहू जये । शापानि सि कुरु ते च ववा ह उ क के व च ॥ १८ ॥

(अहं सुखं वाचकं शापुं कृष्णमेव नव्य नामाभिहितं कर्मा आनेषां विमर्शये ॥  
 १४० सुखिनां चोदि दि ४६५ सुखिना दि ४०० न सुखिनां चोदि ३  
 सा सु (१४०-२०)

উচ্চশ্রুমেচ যানাদি গাদকাচ কথয়নে | শ্রবণে সব মাৰকু কোৰি দত্তকু নিশ্চয়ো ॥১১

শুক্ল আশ্রমে পিরা পোড়া পৰম জোতা বুৰহাৰ কৰিব নিশ্চয়, অশুক্ল বধা দ্ৰোণি পোতা  
হক দিব, অতিনিম্ন জাবে শুক্ল আশ্রমত থাকিব; ॥১১১১

১৩ ॥১১ শুক্ল মাৰু অশ্রুমাৰু শুক্লানোচ বজ্জয়ে | শাল শিঙ্গি কুকটচ বৰাহ শ্রমণক ॥১১১১  
শুক্ল মাৰু মাৰু, শুক্লান, শাল, শিঙ্গি, কুকটচ, কেকোড়া, কুকুৰা, সাহাৰ ইত্যাদি  
অশ্রু বস্তু শ্রমণত পোম্বিছে ॥১১১

(ইকুগ নিযমে পুৰোবি দিশাতি কাৰ মূৰ্তি কা দিব, নতুন নাম অচা দিব) ॥১১১১

॥ (नाथूर, कदावि, मिकव, रेखादि आधुवि लोकक उदरव बोधा निरुमे शक्ति उदरं दि,  
पार्वे, गोम-पटात, दुर्वायुम तिमि हाईम उममि जल दि शारे पोयारे निरु सतिमित अकणे  
कवारे, गोमुख गोवव अमप धुधव, शांति कविव, पार्वे वाश्यास गोव, आठ अकणेदू, रिदू  
बुदि बुज्जहि दिव ॥१) अकल्प शक्ति

नमो अद्य श्रीगुरुदेवा अमुक धामे अमुक वासाद्विते अर्कवे अमुक नाम्ने अमुक  
श्यांतिथे वेतामिन विनिष्ठ पुण्ये आरताये उग्रदेवे आरतवर्षे मिम श्री विष्णु श्यांति  
कामनाय श्री अमुक दास, मम अमुक जाते जन्माधुवि कुले निर्गता, एतन्तेन कुणा

মম প্রবর্তনাত্ত নিমিত্তক আশ্বিন পাবনি বাসবে বাসনায বা শীতকবে অমায়সিয়া

(প্রহ্মান্তির ভোক্ত্য উৎসর্গ করা অক্ষয় এই কাল)

নমো অমু শীশু উৎসর্গ অমুক মাঙ্গি অমুক পক্ষে অমুক বাসস্থিতে জর্কবে অমুক  
তিথো কৈতাম্বন বিমিষ্ট পুণ্যে ভাবতাক্ষে প্রদেনে বাস্যম ধাষি মো অমু শী অমুক  
দামস্য শুভ্যং কর্ত্ত্বাঙ্গিঃ পূর্বে উদ্ভূ কক্ষানি অক্ষাদন বসন জনিত যৎ বেত্তন্যদৌধ  
মাস্তি ৩৭ পাপা ক্রয় বাসনায শীশুক পুণ্ডি নিমিত্তক অমু দৈচাদায়ন ব্রতমহ  
সবিজে ব্রতানন্তে বিনু মুণ্যার্থে অমুক অক্ষকন্ মুদ্রান শী উক চবনেদানমহ বাবজ

কোনো নবায় সুবৃত্ত পবন মোমোখাকে বিয়ু বসায় যদি উক্ত কৃষ্ণে মনকল্পে স্থায়  
কিঞ্চিৎ দৃষ্ট হৈ স্যান্তি কথিব ) ॥